RESEARCH PAPER | Music | Volume : 4 | Issue : 10 | October 2014 | ISSN - 2249-555X

Aswar

Avdesh Pratapsinh tomar

Associate Professor Music Department Dr.Harisinh Gaur VishvaVidhyalaya, Sagar. M.P.

संगीत सप्तक पर आश्रित है सप्तक शडज पर और शडज नाद का मात्रक है सात स्वरों से बारह और उनका आधार बाइस श्रुतियां सर्वज्ञात और सर्वमान्य है। सा, रे, ग, म, प, ध, नि ये वैष्विक संगीत में विद्यमान है नाम एवं रूप भिन्नता मात्र है सा–प, सा–म एवं सा–ग संवाद भी बिना मतभेंद के माना जाता है जव हम स्वरों के सूक्ष्म अध्ययन की ओर बढ़ते है तो स्वरों का रूप उनका श्रुतियों से संबंध स्पश्ट होता है। श्रुति श्रव्य ध्वनि है संगीत उपयोगी है दत्तिल ने लिखा है।

''इति विषशास्ते श्रवणाच्छुति संज्ञिता ''[1]

अर्थात श्रुतियां विषेश प्रकार की ध्वनि है, जो सुनी जा सकती है नान्यदेव भी यही कहते है :

श्रुति : श्रूयत इत्येवं ध्वनि रेशो ऽभिधीयते।। [2]

श्रुणोते : कर्म विहिते प्रत्यये क्तिनि जाप्ते।।

22 श्रुतियों का विभाजन नामकरण भिन्न–भिन्न है। पहली श्रुति को भरत ''तीव्रा'' कहते तो दत्तिल ''नान्दी'' और नारद उसे ''सिद्धा'' कहते है। श्रुतियों की पाच जातियां भी वाटी गयी है दीप्ता, आयता, करूणा मृदु और मध्या। श्रुतियाँ की आपस में दूरी के प्रष्न पर भिन्न–भिन्न मत है भरत द्वारा वणित श्रुतियों समान दूरी पर है या असमान इस पर भिन्न–भिन्न मत है आचार्य वृहस्पति के अनुसार यह अंतर असमान है। उन्होने श्रुति दर्पण का अविश्कार किया और यह सिद्ध किया कि ''श्रुतियों में तीन प्रकार के अंतर है''[3] । भरत का शडज एवं मध्यम ग्राम के अंतर की श्रुति ''प्रमाण श्रुति'' मानी गऽर्ड। यह श्रुति पंचम को खिसकाकर मध्यम ग्राम का निर्माण कराती है। आचार्य वृहस्पति द्वारा माने गये श्रुतियांतर क, ख और ग है जिसमें ''क'' अंतर सबसे बड़ा ''ख'' उससे छोटा और ''ग'' अंतर सबसे छोटा है। पंडित ओकार नाथ ठाकुर ने भरत की प्रमाण श्रुति को सितार पर वाज की तार (प्रथम तार) के धैवत तथा पंचम के तार के धैवत स्वरों को बजाने से जो ध्वनि में अंतर होता है उस अंतर के वरावर माना है। उनके श्रुत्यांतर कोमा, लघु और लीमा है जिसमें ''लीमा सबसे बड़ा और कोमा सबसे छोटा है। कोमा का गणितीय मूल्य 81/80 लीमा का 256/243 तथा लघु का 25/24 है''[4] यह क्रमैंाः 1.0125, 1.0535 एवं 1.0417 इस ''श्रुत्यिांतर को मेजर टोन, माइनर टोन एवं सेमी. टोन कहते है जिनका मान है 10/8 त्र 1.25, 10/9 त्र 1.11, 16/15 त्र 1.067 परंतु समान स्वरांतर परंपरा में 12 स्वरों का विभाजन हाफ टोन या मीन समिटोन है जो 53/50 या 25 सेंट है इस आधार पर समान दूरी पर 12 स्वर स्थित है''[5] समान स्वरांतर मुनंस जमउचमतंउमदज या जमउचमतमक `बंसम के आधार पर हारमोनियम एवं पियानों का विकास हुआ।

''भारतीय स्वर सप्तक नेचुरल स्केल है और पाष्चात्य सप्तक टेम्पर्ड स्केल''[6] सूक्ष्म रूप में देखा जाए तो आज लगभग सभी भारतीय राग बेसुरे हो गए है और मुख्य थाट भी सटीक नहीं रहे इसी कारण षायद आज रागों का वह प्रभाव नहीं दिखता जो तानसेन वेजू के समय में प्रत्यक्ष दिखता था। मुसलमानी प्रभाव से बचे दक्षिण ाी संगीत के एक मात्र जानकार कल्लिनाथ कहते है'' (1) मैरे युग में प्रत्येक राग सा से षुरू हुआ करता था (2) शडज का संवादी पंचम ही रह गया है। ऋशभ के संवादी पंचम का प्रयोग लुप्त होने के कारण दोनों ग्रामों के रागों में शडज के संवादी पंचम का ही प्रयोग होने लगा है (3) श्री राग में ऋशभ गंधार और ध ैवत निशाद एक–एक श्रुति चढ़गये हैं नट और देवश्री नामक राग में ऋशभ ने अंतर गंधार और धैवत ने काकली निसाद की दो–दो श्रुतियां ले ली हैं इस प्रकार पंचश्रुतिक ऋशभ व पंच श्रुतिक धैवत जैसी अवैदिक संज्ञाओं का जन्म हो चुका है (4) कनटि गोढ़ में शडज के स्थान पर निशाद अंष ग्रह हो गया है अर्थात इस राग का थाट बदल गया है हिंडोल में ऋशभ और धैवत के लोप के स्थान पर ऋशभ,पंचम का लोप होने लगा है कहीं–कहीं शाडव और औडुव रागों में लुप्त स्वर का प्रयोग भी किया जाने लगा है।'' निश्कर्श रामामात्य से 100 वर्श पूर्व राग वर्गीकरण एवं स्वर श्रुति विभाजन भ्रश्ट हो चुका था। राग रागिनियों का अंतर्सवंध आज अस्पश्ट सा दिखता है क्योकि न तो जो नाम और स्वरूप आपस में एक दूसरे से मेल खाते है न हि वे स्वर भी आज के स्वरों से साम्य रखते है अंतर भले ही अल्प हो पर वर्शा, अग्नि, पवन, चर–अचर पर दृश्य प्रभाव डालने के लिए वह आवष्यक है।

स्वरों का स्वरूप तो समान दूरी के स्केल ने बिगाडा बजा है ही साथ ही आज के यंत्र उसे और विगाड़ रहे है। संगीत के विद्यार्थी जो हारमोनियम, सिंथ या स्वर वाद्य वजाकर सीखते है वे भी बेसुरे होते है कभी तो मानवीय भूल से तो कभी वातारण के प्रभाव से। इलेक्ट्रानिक सिथेंसाइजर जो सस्ते होने से सभी खरीदते है अकसर बेसुरे होते है कई का तो परीक्षण या मिलान करने पर चौकाने वाले अंतर सामने आते है अतः जो स्वरों का स्वरूप प्राचीन विद्वान स्वर संवाद के माध्यम से समझाते थे वह सही या सटीक होता था।

आज संगीत षिक्षा प्रारंभ करने पर स लगाते समय ही बच्चे को हारमोनियम या सिथ दे दिया जाता है वह एक ऐसा सहारा होता है जो आगे की षिक्षा की दिषा और दषा तय कर देता है बच्चों के गले में हारमोनियम/सिंथ के स्वर बैठ जाते है वह जब वाद्यों को वजाकर गाता है तो वही स्वर गाता है जो वाद्य में निकलते है फिर वे सही हो या गलत। प्रारंभ का स्वर ज्ञान ही आगे पक्का होता जाता है। गायक वेहुदा बेसुरे लगते है उसका यही कारण होता है।

नेचुरल स्केल भले ही आज न गाये जाए पर समान दूरी वाला सप्तक तो ठीक–ठीक गाया बजाया जाना चाहिए। वाद्यों के सहारे गाने वाले गायक रागों में लगने वाले स्वरों के विषेश रूपों से भी परिचित नहीं हो पाते है जैसे राग दरवारी कानडा के कोंमल गंधार (अति कोमल) या पंकरा में गंधार से अल्प रे लेते हुए शडज पर आना या फिर राग मियॉ मल्हार में दोंनों निशाद का प्रयोग आदि। मीड़ गमक मुर्कियॉ आदि तो वाद्यों के सहारे सीखना संभव ही नहीं।

स्वर संगीत का आधार है और जब स्वर ज्ञान ही अधूरा और अस्पश्ट हो तो संगीत की स्थिती भी क्या होगी यह समझा जा सकता है। विद्यार्थियों को स्वर वाद्य का सहारा दिलाने से पूर्व अच्छा स्वर ज्ञान करना आवष्यक है अन्यथा हमारा संगीत अपना मूल स्वरूप और गहन गूड़ सूक्ष्मता खो देगा जिसके लिए आनी वाली पीढ़ियॉ हमें माफ नहीं करेगी।

REFERENCE 1. दत्तिल कृत दत्तिलम् द्य 2. नान्थदेव रचित भरत भाष्य द्य 3. आचार्य वृहस्पति द्य 4. पंडित आंकारनाथ ठाकुर कृत प्रणवभारती द्य 5. ''संगीत वोद्य'' शरत चंद्र श्री घर पराजपे पृष्ठ 50 द्य 6. ''संगीत वोद्य'' पृष्ठ 52 द्य

Volume : 4 | Issue : 10 | October 2014 | ISSN - 2249-555X

Volume : 4 | Issue : 10 | October 2014 | ISSN - 2249-555X

Volume : 4 | Issue : 10 | October 2014 | ISSN - 2249-555X